A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

मानव जीवन में संगीत महत्त्व

Dr. Ritika Tripathi[1], Rajnish Kumar Tiwari [2]

1 Former Research Scholar, Department of Vocal Music, Banaras Hindu University, Varanasi
2 Research Scholar, Department of Instrumental Music, Banaras Hindu University, Varanasi

OPEN ACCESS

सारांश

यह शोध-पत्र संगीत की उत्पत्ति, उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और चिकित्सकीय महत्व पर केंद्रित है। संगीत को एक ऐसी दिव्य कला के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न केवल मानव हृदय और मस्तिष्क को प्रभावित करती है, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि की संरचना एवं संचालन से भी जुड़ी हुई मानी जाती है। भारतीय वैदिक परंपरा के अनुसार, संगीत की उत्पत्ति "ओम्" या प्रणव ध्वनि से हुई है, जिसे सृष्टि की आदि ध्वनि माना गया है। वैदिक साहित्य में संगीत को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर आत्मा की शुद्धि और ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जुड़ने का माध्यम बताया गया है।

इस शोध में यह भी स्पष्ट किया गया है कि संगीत, मानव संस्कृति का प्रतिबिंब है और समय के साथ इसकी विविध शैलियाँ जैसे शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक संगीत, ग़ज़ल, भजन आदि विकसित हुईं इसके साथ-साथ संगीत की सार्वभौमिक भाषा होने की विशेषता इसे सभी राष्ट्रों और संस्कृतियों को जोड़ने में सक्षम बनाती है।

संगीत का चिकित्सा क्षेत्र में उपयोग भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। "संगीत चिकित्सा" (Music Therapy) मानसिक रोगों, तनाव, अवसाद तथा अन्य न्यूरोलॉजिकल विकारों के उपचार में उपयोगी सिद्ध हुई है। पश्चिमी देशों में इसकी लोकप्रियता के साथ, भारत में भी इस विधा ने अपना स्थान बनाया है।

इस शोध के निष्कर्ष में यह स्थापित किया गया है कि संगीत केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व और चेतना का एक अनिवार्य भाग है। यह न केवल मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाता है, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन को भी समृद्ध करता है।

मुख्य शब्द : *संगीत की उत्पत्ति, नाद ब्रह्म और ओंकार, संगीत और मनोविज्ञान, संगीत चिकित्सा, भारतीय वैदिक संगीत परंपरा, संगीत और सांस्कृतिक समृद्धि*

भूमिका

संगीत एक ऐसी कला है जो मानवता के इतिहास से जुड़ी हुई है और उसके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संगीत मानवता के लिए सबसे प्राचीन और सुंदर कला साधनों में से एक है। यह कला न केवल हमारे मनोविकार को प्रशांत और संतुष्ट करती है बल्कि हमारे सामाजिक सांस्कृतिक और समर्थक संबंधों को भी मजबूत करती है। संगीत की गहराई और उसकी विविधता मानव के संचार माध्यमों द्वारा सार्वभौमिक भावनाओं को सहज करती है। संगीत मानवता की भावनाओं उत्साह भावुकता शांति खुशियाँ विचारों और भावुकता को व्यक्त करने का अद्भुत माध्यम है। संगीत का महत्त्व मानव जीवन में अनगिनत तत्व से संबंधित हैं जिनमें से कुछ मुख्य विचार इस शोध में प्रस्तुत किए जाएंगे।

अतः संगीत का मानव हृदय पर सहज ही अत्यधिक विस्तृत एवं गहरा प्रभाव पड़ता है। मानव हृदय को प्रत्येक धड़कन संगीतमय संगीत केवल मानव को ही नहीं बल्कि प्रकृति के कण-कण को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। संगीत द्वारा अपने ईष्ट का आह्वान करना, दीपक जलाना, वर्षा होना आदि कपोल कल्पना नहीं बल्कि संगीत की शक्ति की महानता के घोतक है। संगीत की इसी क्षमता को समझकर मनुष्य ने पूर्ण क्षमता से इस कला की साधना वर्षा तक करके सामने ऐसे उदाहरण दिए जिसे लोग चमत्कार कहने लगे। भारतीय दर्शन में संगीत मन बहलाने का साधन मात्र नहीं है इसे साधना माना गया है। कई विद्वानों का मत है कि संगीत की भी उत्पत्ति ओम से हुई है और ओम से ही विद्वानजन सृष्टि को भी की भी उत्पत्ति मानते हैं। इन्हीं से सृष्टि की उत्पत्ति हुई सृष्टि के बाद अन्य ध्वनियां उत्पन्न हुई, ध्वनि से ईश्वर और स्वरों से संगीत का जन्म हुआ। प्राचीन मुनियों का यह कहना है कि ब्रह्मांड में जो ध्वनियां है जगत के सभी प्राणियों में सूक्ष्म रूप से इसी ध्वनि की धारा बहती है। इस तरह संपूर्ण जगत की अदृश्य रूप शेष संगीतमय मनुष्य इसी को समझकर इस कला की साधना करता है।

संगीत के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने से पहले सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धांतों के साथ संगीत की उत्पत्ति को समझना आवश्यक है। क्योंकि इन दोनों की उत्पत्ति में गहरा संबंध है। अतः सर्वप्रथम सृष्टि की उत्पत्ति के तत्वों पर विचार किया जा रहा है। सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में जितने भी मत है

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

उनको दो भागों में विभक्त कर समझा जा सकता है। विचारधारा की दृष्टि से आस्तिक मत और विकासवादी मत कह सकते हैं।

आस्तिक मतानुसार सृष्टि ईश्वर की रचना है और विकासवादी मत में जड़ प्रवृत्ति का आकस्मिक सहयोग संसार की उत्पत्ति का कारण माना जाता है।

संगीत की उत्पत्ति कब और कैसे हुई इस संबंध में जितना भी मत प्रचलित है उन पर इन दो विचारधाराओं का प्रमुख रूप से प्रभाव देखा जाता है। आस्तिक मत का प्रबल समर्थक भारतीय विचारधारा है इसका प्रमुख स्रोत वैदिक साहित्य है। वैदिक साहित्य पर आधारित सिद्धांतों के आधार पर ही भारतीय संगीत शास्त्रों में संगीत उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। यह वेद आधारित वर्णन इतना स्पष्ट व्यापक और सार्थक है कि इसके अंतर्गत विकासवादी मत के प्रमुख सिद्धांत क्रमिक विकास का भी तर्कसंगत रूप में समावेश देखने को मिलता है। वैदिक साहित्य से यह निश्चित है कि संगीत शास्त्र विज्ञान की एक शाखा है और इसका संबंध सामवेद का उपवेद गंधर्ववेद से है। वेदांत साहित्य में शिक्षा के अंतर्गत इसकी व्याख्या मिलती है। प्रस्तुत संदर्भ में अब विचार का विषय यही है कि सृष्टि उत्पत्ति के सिद्धांत से संगीत की उत्पत्ति का संबंध किस प्रकार स्थापित होता है। यह परमात्मा के मुख से स्वतंत्र ज्ञान है।

"वैदिक साहित्य और संगीत ग्रंथों के आधार पर यही निश्चित होता है कि संगीत की उत्पत्ति प्रणव (ओमकार) से हुई है। प्रणव नदात्मक ब्रह्म है। सृष्टि के आदि में पितामह ब्रह्मा को ब्रह्म के निःश्वास रूप वेदों का ज्ञान प्रणव से ही प्राप्त हुआ। साम मत्रों का स्वर युक्त ज्ञान भी पितामह को ब्रह्म (परमात्मा) से ही प्राप्त हुआ और ऋषियों ने साम स्वरों को गांधर्व की दृष्टि से षडज आदि सप्त स्वरों के नाम से प्रचलित किया। इन्हीं सात स्वरों का प्रयोग कालांतर से गान वाद्य के विविध विधाओं में किया गया।"[1]

संगीत उत्पत्ति की इस चर्चा का सार इतना ही है कि भारत की परंपरा ज्ञान तथा इतिहास सृष्टि का रचयिता ईश्वर को मानते हैं। इसकी पुष्टि कई विशाल साहित्य करते हैं जो आज हमारे बीच विद्यमान है। ईश्वर को अगर हम सृष्टि का रचयिता मानते हैं तो इस सृष्टि के व्यवस्थित संचालन का उत्तरदायित्व भी ईश्वर का ही है। इस उत्तरदायित्व को निभाते हुए विविध कलाओं और विद्या का मूल आधार वैदिक ज्ञान पितामह ब्रह्मा द्वारा ऋषियों को प्रदान किया गया। पितामह ब्रह्मा द्वारा ऋषियों को प्रदान किया गया। ऋषियों ने इस ज्ञान धारा को आगे बढ़ाया हजारों लाखों करोड़ों वर्षों से यह परंपरा चली आ रही है। भारतीय संगीत की यही विशेषता है कि वह आदिकाल से ही धरा रूप में प्रवाहित होती हुई आज तक बहती आ रही है।

सृष्टि और संगीत की उत्पत्ति में विकासवादी विचारधारा यह कहती है कि "भारतीय वैदिक मातानुसार सृष्टि परमात्मा की रचना है। संगीत के सप्त स्वरों का आदि रूप नाद ब्रह्ममय ओमकार है। यही परम् पुरुष परमेश्वर की स्वर मय आदि वाणी है। यह शब्द भी है और स्वर भी है। संसार में जब कुछ नहीं था अर्थात् आकाश शादी पंचभूतों का जब अस्तित्व नहीं था तब केवल ओंकार था तात्पर्य यह है कि भारतीय वैदिक मत संगीत की उत्पत्ति को पंचभूतों से भी प्राचीन मानता है।"[2]

विकासवादी मतानुसार सृष्टि की उत्पति और विकास का क्रम यह है की अमीवा से लेकर मानव तक एक ही वस्तु के परिवर्तित रूप है। पशुओं, पक्षियों, सर्पादी जीव जंतुओं चींटी खटमल आदि जीवों का एक अमीवा से ही विकास हुआ है एक का दूसरे के रूप में परिवर्तन यही विकास का सिद्धांत है। विकासवादी सिद्धांतों में और मत मतान्तर है परंतु सबका निष्कर्ष यही है कि सृष्टि किसी की रचना नहीं है। भौतिक पदार्थ का ही संयोग है। यही कारण है कि विकासवादियों का आदिमानव ज्ञान ही अविकसित बुद्धि का था। इसलिए उसे सभ्य बनने में हजारों लाखों वर्ष लग गए। आदिकाल में उसके पास आपस में बातचीत करने के लिए कोई भाषा नहीं थी इसीलिए इशारों से अपने भावों को व्यक्त करता था। बहुत समय बाद पशु पक्षियों की बोलियों, दो वस्तु के टकराहट से उत्पन्न ध्वनियों, बदल के गरजने, झरनों आदि की आवाजों से प्रेरणा ग्रहण कर अपने मुख से विभिन्न प्रकार की आवाज निकालने लगे। धीरे-धीरे इसी प्रकार के किये गए प्रयत्नों के परिणामों से सांगीतिक स्वरों का विकास हुआ। सांगीतिक स्वरों के विकास में हजारों लाखों वर्षों का समय लग गया है। संगीत का प्रारंभिक इतिहास यही कहता है और यही सत्य भी है।

संगीत का चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक महत्व

जिस प्रकार चिकित्सा के प्रकारों में एलोपैथिक, होम्योपैथिक, नेचुरोपैथी जैसी पद्धतियों का चलन है। उसी प्रकार एक अन्य पद्धति भी अधिक प्रचार में है, जिसे हम म्यूजिक थेरेपी के नाम से जानते हैं। विभिन्न प्रकार के पत्र-पत्रिकाओं में इसकी वृहद चर्चा है और दिन प्रतिदिन नवीन प्रयोग

[1] देवांगन, तुलसी राम, भारतीय संगीत शास्त्र, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ आकादमी, पृष्ट सं०- 8
[2] देवांगन, तुलसी राम, भारतीय संगीत शास्त्र, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ आकादमी, पृष्ट सं०- 8

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भी इस क्षेत्र में देखने को मिल रहे हैं। भारतीय संगीत की सुकून के साथ-साथ प्राण दाहिनी क्षमता को पहचान कर विदेशों में म्यूजिक थेरेपी का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग हुआ है और उसके सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त हुए हैं। "मानसिक रोगों के लिए संगीत के द्वारा उपचार की विधि विदेश में इतनी अधिक सफल हुई है कि वहां की म्यूजिक थेरेपी आज भारत में भी प्रयोग में आने लगी है। सन् 1944 में मिशिगन विश्वविद्यालय में संगीत चिकित्सा से संबंधित विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम तैयार किए गए और सन 1950 में कन्सास विश्वविद्यालय में इससे संबंधित एक संस्था की स्थापना की गई जिसका नाम नेशनल एसोसिएशन फॉर म्यूजिक थेरेपी रखा गया जिसे संक्षिप्त में N.A.M.T. से पुकारा जाने लगा। मानसिक रूप से विकृत लोगों के लिए संगीत को एक चमत्कारी औषधि के रूप में स्वीकार करके इसके अद्भुत और सफल परिणाम प्राप्त किए गए।"[1] "सुप्रसिद्ध मनीषी नॉर्मन बिसेंट पील साहब ने अपनी पुस्तक 'ट्रेजर करेज एंड कॉन्फिडेंस'(Treasure carrege and Confidence) में उल्लेख किया है कि जीवन को पवित्र मुखर सुखमय एवं अतीन्द्रिय क्षमता से संपन्न बनाने के लिए नियमित प्रार्थना करना अनिवार्य है। यह केवल पूजा अर्चना का विषय नहीं है अपितु आत्म सत्ता को विराट चेतना के साथ जोड़ने की प्रचंड प्रक्रिया है।"[2]

नाद के दो प्रकारों में अनाहत नाद उपासना का विषय है इसकी अंतिम सीमा नाद ब्रह्म है अर्थात नाद ब्रह्म का अभिप्राय ही प्रार्थना है। स्वर और लय के माध्यम से ईश्वर का स्मरण करना हनुमान चालीसा, दुर्गा सप्तशती, शिव तांडव को रटना प्रार्थना नहीं अपितु ईश्वरीय गुणगान की ऊर्जा को महसूस करते हुए भगवान का नाम लेना ही प्रार्थना है। वहीं स्वास्थ्य वर्धन का एकमात्र उपाय है। इसीलिए संगीत चिकित्सा एक उत्तम चिकित्सा पद्धति है।

पुरातन काल से ही संगीत को बारंबार चिकित्सक कारक के रूप में उपयोग में लाया जाता रहा है। संगीत मधुर ध्वनि के माध्यम से एक योग प्रणाली की तरह है जो मानव जीवन पर कार्य करती है तथा आत्मज्ञान के हद के लिए उनके उचित कार्यों को जागृत तथा विकसित करती है जो कि हिंदू दर्शन और धर्म का अंतिम लक्ष्य है। भारतीय संगीत का प्रधान तत्व मधुर में ही रस का आधार है। विभिन्न राग केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली से संबंधित अनेक रोगों के इलाज में प्रभावित पाए गए हैं। चिकित्सा के रूप में संगीत के प्रयोग करने से पहले यह अवश्य पता करना चाहिए कि किस प्रकार के संगीत का उपयोग हो। संगीत चिकित्सा का सिद्धांत सही-सही शैली तथा संगीत के मूल तत्वों के सही प्रयोग पर निर्भर करता है।

संगीत का शैली और सांस्कृतिक समृद्धि के साथ जुड़ाव

संगीत मानव के समृद्ध संस्कृति का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह विभिन्न रूपों में विकसित होकर मानव की समृद्ध संस्कृति और परंपरा को प्रदर्शित करता है। प्राचीन काल के संगीत के बाद ध्रुपद और फिर गायन के विभिन्न घरानों का विकास हुआ। धीरे-धीरे विभिन्न गायन शैलियों जैसे शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, गजल, भजन का प्रचार समय के साथ-साथ होता गया। 22वीं सदी में इंटरनेट के माध्यम से नई चीजों को सिखाना उनसे जुड़ना अपनी प्रस्तुति देना बहुत ही आसान हो गया है। इस माध्यम के विकास के साथ-साथ संगीत तथा अन्य क्षेत्रों में भी विकास तीव्र गति से बढ़ रहा है। हम अन्य क्षेत्रों की संस्कृति से जुड़ते हैं और दूर बैठे अलग संस्कृति के लोग हमारी संस्कृति से जोड़ते हैं। संगीत विभिन्न रूपों में विकसित होकर मानवता की समृद्धि संस्कृति और परंपरा को प्रदर्शित करता है। संगीत के माध्यम से लोग अपने सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को बढ़ाते हैं। विभिन्न संगीत संस्कृतियों और परंपराओं का सम्मेलन लोगों को एक दूसरे के साथ जोड़ता है और उन्हें सम्मान और समर्थन का भाव प्रदान करता है।

संगीत का एक अद्भुत गुण है कि यह भाषा के पार भावनाओं को साझा कर सकता है। भाषा की अपेक्षा संगीत की सीमा बहुत व्यापक है और यह विभिन्न राष्ट्रों और संस्कृतियों को एक साथ लाने का सामर्थ्य रखता है। भाषा के बारे में उचित ज्ञान न होने के कारण संगीत भाषा के परे भी लोगों को भावनाओं का अनुभव करता है और उन्हें एक दूसरे से जोड़ता है। संगीत का मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में इसकी विविधता सामाजिक, समृद्धि, मनोवैज्ञानिक, उपयोगिता राष्ट्रीय एकता को स्थाई करने में सक्रिय योगदान है। संगीत ने मानवता के अनंत संचार के माध्यम से उत्साह भावुकता, शांति, खुशियां और मनोरंजन का साधन बनाया है और इसका महत्व हमारे जीवन के हर पहलू पर दिखाई देता है। संगीत को

[1] शर्मा, डॉ॰ महारानी और शर्मा, डॉ॰ जया, संगीत मणि भाग दो, पृष्ट संख्या-110
[2] शर्मा, डॉ॰ महारानी और शर्मा, डॉ॰ जया, संगीत मणि भाग दो, पृष्ट संख्या-112

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानकर लोकसभा संतुष्टि खुशियां और समृद्धि का आनंद लेते रहते हैं। डॉ॰ स्वामी ने लिखा है कि "कला मनुष्य के भाव-जगत की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। इस स्वतंत्र अभिव्यक्ति के द्वारा मानव सत्यं, शिवम्, सुंदरम् का निर्धारण करता है। अतः कला मनुष्य की प्राकृतिक और स्वाभाविक भूख है जिसे वह संगीत, काव्य और चित्रकला द्वारा शांत करता है।"[1]

निष्कर्ष

संगीत केवल ध्वनियों का संयोजन नहीं, बल्कि यह मानव चेतना, भावनाओं और आध्यात्मिकता से जुड़ा एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। यह कला प्राचीन काल से ही न केवल मनोरंजन, बल्कि आत्मोन्नति, चिकित्सा और सांस्कृतिक एकता के क्षेत्र में भी अपना अमूल्य योगदान देती आ रही है। भारतीय दर्शन में संगीत को ईश्वर से जोड़ने वाली एक साधना के रूप में देखा गया है—जिसकी उत्पत्ति 'ॐ' से मानी जाती है, जो स्वयं नादब्रह्म है। विकासवादी और आस्तिक दोनों विचारधाराएं संगीत की उत्पत्ति को अलग-अलग दृष्टिकोण से समझाती हैं, लेकिन दोनों इस बात पर सहमत दिखते हैं कि संगीत मानव जीवन की प्रारंभिक अभिव्यक्ति रहा है। चाहे वह प्राचीन ऋषियों की नाद साधना हो या आदिमानव की प्रकृति से मिली ध्वनियों से प्रेरणा, संगीत सदैव से मानव के अस्तित्व और विकास का एक मूल तत्व रहा है। संगीत का मनोवैज्ञानिक और चिकित्सीय महत्त्व भी अत्यंत गहरा है। मानसिक विकारों, तनाव और अवसाद जैसी समस्याओं में संगीत-चिकित्सा के सकारात्मक परिणाम आज आधुनिक चिकित्सा जगत में भी मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। यह स्पष्ट करता है कि संगीत न केवल आत्मा की शांति है, बल्कि शरीर और मस्तिष्क की चिकित्सा भी।

इसके साथ ही, संगीत एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करता है, जो भिन्न भाषाओं, जातियों और संस्कृतियों को जोड़ने की शक्ति रखता है। यह बिना बोले भी भावनाओं को साझा करने की क्षमता रखता है, और इस प्रकार मानवता की एकता और सद्भाव को प्रोत्साहित करता है। संगीत न केवल ईश्वर की देन है, बल्कि यह मानव जीवन के प्रत्येक पहलू में गहराई से समाहित है—चाहे वह धार्मिक हो, सामाजिक, वैज्ञानिक या सांस्कृतिक। अतः हमें चाहिए कि हम इस दिव्य कला को जीवन में अपनाएँ, उसका सम्मान करें, और इसके माध्यम से आत्मिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास की दिशा में अग्रसर हों।

सन्दर्भ

1. देवांगन, तुलसी राम, भारतीय संगीत शास्त्र, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ आकादमी, पृष्ट सं॰- 8
2. देवांगन, तुलसी राम, भारतीय संगीत शास्त्र, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ आकादमी, पृष्ट सं॰- 8
3. शर्मा, डॉ॰ महारानी और शर्मा, डॉ॰ जया, संगीत मणि भाग दो, पृष्ट संख्या-110
4. शर्मा, डॉ॰ महारानी और शर्मा, डॉ॰ जया, संगीत मणि भाग दो, पृष्ट संख्या-112
5. शर्मा, डॉ॰ महारानी और शर्मा, डॉ॰ जया, संगीत मणि भाग दो, पृष्ट संख्या-98

[1] शर्मा, डॉ॰ महारानी और शर्मा, डॉ॰ जया, संगीत मणि भाग दो, पृष्ट संख्या-98